'दो शब्द'

भारतगौरव आचार्यरत्न श्री १०८ देशभूषणजी महाराज के संघ सहित आज के शुभ दिन भारत की राजधानी में आगमन पर हम इस पुस्तिका 'दिगम्बरत्व पर एक दृष्टि' प्रस्तुत करने में अपना सौभाग्य समझते हैं। आचार्य श्री आज के युग की एक महान् विभूति हैं। वे केवल जैन जाति के ही नहीं वरंच समस्त मानव समाज के महान् आध्यात्मिक संत हैं जिनकी छत्र छाया में आज के मानव को शांति प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आपकी भाषा बड़ी सरल तथा वाचनशैली बड़ी रोचक है। १९५५, १९५६, १९५७ के दिल्ली चतुर्मासों में आप के द्वारा जो धर्मोपदेशों की वृष्टि हुई है, उससे मानव समाज का बहुत उपकार हुआ है। जैन मित्र मण्डल का अपने जीवन के ४८ वर्षों में केवल एक ही उद्देश्य रहा है—'जैन धर्म तथा साहित्य का प्रचार।' आचार्य श्री आज के युग के सर्वोच्च धर्म प्रचारक हैं। 'दिगम्बरत्व'—संसार में मानव की सर्वोच्च विशेषता है और विरले ही दिगम्बरत्व को अपना सकते हैं। बहुत से मानव जो दिगम्बरत्व के वास्तविक महत्व को नहीं समझते इस विषय में कुछ टिप्पणी करते हैं। उनही के ज्ञान-वृद्धि के हेतु जैन समाज के यशस्वी विद्वान् गुरुभक्त बालब्रह्मचारी पं० सुमेर-चन्दजी 'दिवाकर' सिवनी ने इस पुस्तक को बड़े परिश्रम पूर्वक लिखा है। आपकी लेखनी अतीव ओजस्वी तथा विद्वत्तापूर्ण है। हमें पूर्ण विश्वास है कि 'दिगम्बरत्व' के प्रति जो भ्रमात्मक भाव कतिपय जनता में विद्यमान हैं वह इस प्रयास से अवश्य दूर होंगे। अबसे ३० वर्ष पूर्व भी मण्डल ने—नागरी में 'दिगम्बर मुनि', अंग्रेजी में 'Nudity of Jaina Saints' तथा उर्दू में 'जैन साधुओं की बृहनगी' नामक पुस्तकें प्रकाशित की थीं जो जनता ने बहुत पसन्द की थीं।

आशा है जनता इस पुस्तक को अपनावेगी। इस पुस्तक के प्रकाशन की समस्त प्रेरणा—मण्डल के प्रधान मन्त्री श्री महताबसिंह जी की है और इसके मुद्रण व प्रकाशन की समस्त व्यवस्था में सदैव की भाँति ला० पन्नालाल जी (प्रकाशक दैनिक तेज) ने अथक परिश्रम किया है।

अजितप्रसाद जैन, ठेकेदार
सभापति

आदीश्वरप्रसाद जैन, एम० ए०
मन्त्री
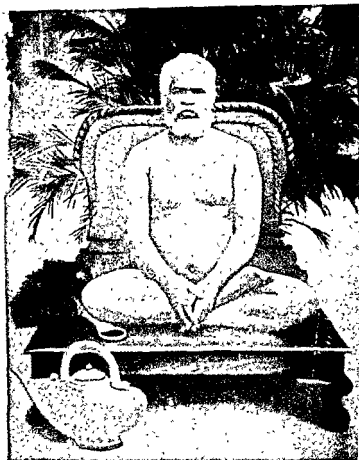
परम पूज्य आचार्यरत्न श्री १०८, देशभूषण जी महाराज

दिगम्बरत्व पर एक दृष्टि

आज का युग-विषय भोग प्रधान है। इस युग का मानव, आहार धन संचय और विषय पोषण आदि पशु जगत सुलभ प्रवृत्तियों में अपने सुरेन्द्र पूज्य मनुष्य जन्म के अनुपम क्षणों को बरबाद कर रहा है। ऐसा लगता है कि चैतन्य पुञ्ज अक्षय शक्ति का भण्डार आत्मा अस्तंगत हो चुका। उसका स्थान जड़वाद से अनुप्राणित आसुरी प्रवृत्तियों ने ले लिया। नैतिक मानव की इतिहासातीत काल से संचित सद्विचार, त्याग, वैराग्य, सेवा, सौजन्य तथा साधुता सदृश सत् प्रवृत्तियों की सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट करके आज का भोगी आर्थिक मानव विज्ञान का आश्रय ले चिन्तनीय एवं दुःखद परिस्थितियों के निर्माण में अपनी सारी शक्ति लगाये हुए है। सच कहा जाय तो यह स्वीकार करना होगा कि हमने ईश्वर का स्थान धन की अन्ध आराधना तथा भौतिक सुखों की पूर्ति को दे दिया है। इस पथ में प्रवृत्त होने से हम वास्तविक शान्ति, शक्ति अभ्युदय और समृद्धि से वंचित हो रहे हैं। अध्यात्मवाद से विमुख भौतिक समृद्धि यथार्थ में ज्वालामुखी के सन्निकट अपना निवास-स्थल निर्माण सदृश विपत्ति-प्रचुर चेष्टा है। कहीं बालू से भी तेल निकला है? मृगतृष्णा के द्वारा प्यासे हरिण की प्यास क्या कभी बुझी है? अतएव अपने हाथ में सदा से अध्यात्मवाद के विमल-दीप को हाथ में रखने वाले चिर प्रबुद्ध भारत का कर्त्तव्य है कि स्वयं कुमार्ग में न गिरकर दूसरों को भी सत्पथ बता दे।

महावीर भगवान् ने लोकोत्तर तपश्चर्या के द्वारा इस परमार्थ तत्व को प्रकाशित किया था कि हमारे ऐहिक तथा पारलौकिक दुःखों का एक-मात्र कारण हिंसा का आश्रय ग्रहण करना है।—"हिंसा प्रसूतानि सर्वदुःखानि।" अहिंसा को निर्बल मानने वाले व्यक्तियों के समक्ष गाँधीजी ने यह प्रमाणित कर दिया कि अहिंसा में अपार शक्ति है। इसका यह कारण है कि अहिंसात्मक पथ में प्रवृत्त पुरुष को आत्मा की अनन्त शक्ति द्वारा अवर्णनीय क्षमता और शक्ति प्राप्त होती है। आजकल राजनैतिक

जगत में अहिंसा शब्द का प्रयोग एक सीमित तथा स्वार्थ पूर्ण अर्थ में किया जाता है। वास्तविक अहिंसा समस्त छोटे-बड़े प्राणियो के प्रति बन्धुता की दृष्टि प्रदान करती है। वह मानवों के सिवाय सभी प्राणियों के प्रति आत्मौपम्य की भावना को जगाती है। यह अहिंसा लच्छेदार भाषणों, सुमधुर सन्देशों में नहीं निवास करती। जब तक कर्मणा, वाचा, तथा मनसा विशुद्धता से जीवन समलंकृत नहीं होता तब तक अहिंसात्मक बनना सम्भव नही है। आजकल विज्ञान ने हमारे विवेक पर पर्दा डालकर ऐसी घातक सामग्री दी है कि जिससे मानवता का सर्वनाश सुनिश्चित है। उसके प्रतिकार निमित्त व्यष्टि तथा समष्टि में अहिंसा की प्रतिष्ठा आवश्यक है। उस अहिंसा की उपलब्धि के लिए सत्य और अपरिग्रहत्व की अनिवार्य आवश्यकता है। अकिंचनता के माध्यम से भगवती अहिंसा के भव्य प्रासाद में प्रवेश प्राप्त होता है। सारा जगत संचय के क्षेत्र में बड़े वेग से दौड़ रहा है। उसको पवित्रता का सन्देश बताने वाले अहिंसामयी प्रवृत्तियुक्त सत्पुरुषों का दर्शन दुर्लभ हो रहा है। कबीर के समान कड़ी भाषा में अपने जीवन द्वारा इस नग्न सत्य का निरूपण कर उन्मत्त मानवों को यह शिक्षा देना आवश्यक है—

कहा चुनावे मेड़िया लांबी भीति उसार।
घर तो साढ़े तीन हथ घना तो पौने चार॥

बड़े-बड़े भवनों में निवास करने वाले विलासी व्यक्तियों के मुख द्वारा उक्त शिक्षा वेश्या द्वारा प्रतिपादित शील की महिमा प्रतिपादन करने के समान सामर्थ्य शून्य है। अहिंसा और अपरिग्रह का सन्देश देने वाला एक-मात्र करुणामणी साधनाओं में संलग्न, आत्म निर्भर, भोग परित्यागी साधु ही समर्थ माना गया है। वह साधु अपने अनुभव एवं आचरण द्वारा जिस तत्त्व का प्रतिपादन करता है उसके द्वारा बड़े-बड़े पापियों को दिव्य प्रकाश प्राप्त होता है। और वे जीवन में परिशोधन कर स्व-पर कल्याण में प्रवृत्त होते हैं। आजकल इन्द्रियों का पोषण करने वाले, धनिकों तथा राजनीतिज्ञों में सुर मिलाने वाले दीनवृत्तिधारी आत्मतेज-शून्य, राग द्वेष, काम, क्रोध, माया, मद, मत्सर तथा अज्ञान में निमग्न साधु नामधारी इतने व्यक्ति मिल जावेंगे कि जिनकी सेना तैयार की जा सकती है। विषय भोग त्यागी दया-मूर्त्ति उज्ज्वल सात्विक जीवनवाले साधुओं की सख्या अत्यन्त विरल है। यह कहावत यथार्थ है—

पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति जी महाराज

अवस्था में ईश्वरीय आभूषण की प्राप्ति होती है। वास्तव में विकारों को छिपाने के लिए विवश व्यक्ति वस्त्र को धारण करता है, पर निर्विकार बालक नग्न विचरण करते हुए प्रत्येक माता के निर्विकार प्रेम का पात्र बनता है। इसी प्रकार बाल रूप धारण करने वाला नारी मात्र को माता देखने वाला साधु भी मातृजाति द्वारा निर्दोष आदर और श्रद्धा का भाजन बनता है। जीव मात्र पर अपनी स्नेहमयी ममता को बपनि वाला विशाल-हृदय युक्त मुनि नग्न होने हुए भी 'दिगम्बर' शब्द से पुकारा जाता जाता है। इसमें एक तथ्य है कि जो उदार आत्मा प्राणी मात्र को सुख प्रदान निमित्त सर्वत्र सर्वदा सजग रहता है, उस विश्वमूर्त्ति महान् आत्मा को दिशा-रूपी अम्बर अर्थात् वस्त्र ही अलंकृत कर सकते हैं।

अहिंसा के सर्व श्रेष्ठ साधक दिगम्बर जैन मुनि ही हैं। ये रात्रि को विचरण नहीं करते, मौन धारण करते हुये परब्रह्म परमात्मा के साक्षात्कार करने के उद्योग में सलग्न रहते हैं। ये अधिक से अधिक दिन में एक ही बार खड़े हुये अपने करपात्रों में भक्ति तथा आदरपूर्वक अर्पण किये गये शुद्ध एवं सात्विक भोजन तथा जल को ग्रहण करते हैं। भीषण ग्रीष्म काल में भी ये दूसरी बार पानी तक नही पीते हुये उग्र तपश्चर्या करते हैं। ये दूसरे से किसी वस्तु की याचना नहीं करते। सिर के केशों के बढ़ने पर ये स्वावलम्वी साधु अपने हाथो से ही केशों को उखाड़ कर फेंक देते हैं। केशों को उखाड़ना जीव-दया की प्रतिष्ठा निमित्त आवश्यक है, अन्यथा बहुत लम्बे केशों के बढ़ने पर सहज ही उत्पन्न होने वाले जूं आदि जन्तुओं का विनाश अवश्यम्भावी है। ये जमीन पर ही अथवा काष्ठासन पर रात्रि के समय एक ही करवट से स्वल्प निद्रा लेते हैं। शरीर की सेवा करना इनका ध्येय नही है। स्वावलम्बन के द्वारा ये परमात्मपद को प्राप्ति निमित्त दिन-रात अपनी आध्यात्मिक साधना में संलग्न रहते हैं।

इनके जीवन का निकट से निरीक्षण करने वाले व्यक्ति का मन स्वयं यह सोचने लगता है कि उसका कल्याण अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह सदृश इन गुरुराज द्वारा पूर्णतया परिपालित नयनगोचर सत्प्रवृत्तियों की समाराधना में है। कड़ा से कड़ा शासकीय कानून बड़े-बड़े भोगियों, व्यापारियों, अधिकारियों तथा इतर मानवों के मन में जिन मंगलमय प्रवृत्तियों का प्रकाश पहुँचाने में समर्थ नही होता वह कार्य इन मुनीन्द्रों की वाणी, सम्पर्क तथा पुण्य-जीवनी द्वारा सम्पन्न होता है। सम्राट् अशोक के पितामह

सम्राट् चन्द्रगुप्त के मन में अपने उज्ज्वल उपदेशों द्वारा प्रकाश प्रदान करने वाले महान् दिगम्बर जैन ऋषिराज भद्रबाहु स्वामी पौन्ड्रवर्धनपुर के निवासी थे, जो आज उत्तर बंगाल में है। उनके कारण चन्द्रगुप्त ने मन में अपने जीवन को विशुद्ध बनाने की ज्योति जगी और उन्होंने दिगम्बर मुद्रा धारण की थी। जिन भरत चक्रवर्ती के कारण हमारा देश भारत कहलाता है, उनके पिता भगवान् ऋषभदेव दिगम्बर महामुनि थे। यह बात प्राचीनतम वैदिक वाङ्मय द्वारा मान्य है। इतिहासातीत काल से अब तक इन तपस्वियों का देश में सदा उच्च स्थान रहा है। जैन दिगम्बर मुनियों के जीवन से अपरिचयवश कुछ भाई उनकी तुलना नागा-साधुओं से करने लगते हैं। दिगम्बर जैन मुनि का जीवन बिताना तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है, इसलिये आज सारे भारत में लगभग २५ दिगम्बर जैन मुनि उपलब्ध होते हैं। भूतकाल की समस्त मानव जाति के बदले परिपूर्ण भारतवासियों की संख्या के अनुपात से एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों के अनुपात में एक व्यक्ति दिगम्बर जैन मुनि के रूप में परिपूर्ण अहिंसा और अपरिग्रह की आराधना करने वाला उपलब्ध होता है।

दिगम्बर जैन मुनि की चर्या का सूक्ष्म रीति से परिशीलन करने पर विचारक व्यक्ति इस तथ्य को सहज ही स्वीकार करेगा कि आज मांस, मदिरा, हिंसा आदि कलुषित प्रवृत्तियों में फंसे हुए विश्व की नौका को विनाश की चट्टान से बचाने के लिए इन साधुराजों का मंगल जीवन सिन्धु [illegible] स्तम्भ सदृश है। जीवित धर्मनीति की प्रतिमा स्वरूप ये तपस्वी [illegible] सम्पर्क में आनेवाले छोटे-बड़े नर-नारियों के चित्त में [illegible] परित्याग कर सदाचार, संयम आदि सद्गुणों की प्रतिष्ठा [illegible] हैं। नागपुर हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डा० एम. बी. नियोगी ने [illegible] जैन श्रमण का दर्शन कर अपूर्व श्रद्धा और हर्ष व्यक्त करते हुए [illegible] ऐसे तपस्वियों के दर्शन से नेत्र पवित्र होते हैं और हृदय में [illegible] भावनाओं का जागरण होता है। वास्तव में [illegible] देनेवाले ऐसे सन्तों का सार्वजनिक सम्पर्क मानवता [illegible] विहीन मानव के लिए एक वरदान रूप है। १९५९ [illegible] राष्ट्रपति, भारतरत्न, संसार के महान दार्शनिक [illegible] राधाकृष्णन जी ने साधु सम्मेलन में परमपूज्य [illegible] श्री १०८ देशभूषण जी महाराज का प्रवचन [illegible] आशीर्वाद ग्रहण कर अपने को धन्य माना है, [illegible]

पूर्णिमा वीर निर्वाण सम्वत २४८५ पर निकले हुए भगवान् पार्श्वनाथ सम्बन्धी जुलूस, पर महिला रत्न राज्यपाल श्रीमती पद्मजा नायडू ने पूज्य श्री देशभूषणजी महाराज तथा उनके साथी दक्षिण भारत से समागत साधु चतुष्टय को देखकर, उन पर पुष्प वर्षा करके, समस्त मातृ जाति का प्रतिनिधित्व करते हुए इन दिगम्बर जैन सन्तों के प्रति अपनी सद्भावना भक्ति एवं समादर का भाव व्यक्त किया था। भारतीय संसद की सदस्या श्रीमती रुक्मिणी देवी अरण्डेल ने ३० नवम्बर १९५८ को हजारों नर-नारियों की उपस्थिति में इन दिगम्बर जैन गुरुओं के प्रति गौरव और श्रद्धा पूर्ण उद्गार व्यक्त किये थे। दिल्ली में १९५६-५७ में कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेवर भाई, गृहमंत्री पंडित गोविन्दवल्लभजी पंत, सुप्रीमकोर्ट के न्यायाधीश श्री वेंकटारमणजी अय्यर, श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला सदृश प्रमुख व्यक्तियों ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलियाँ अर्पित की थी। दि० जैन सम्मेलन के रजत-जयंती समारम्भ का कलकत्ते में उद्‌घाटन करते हुए बगाल के विद्वान् सुसंस्कृत वर्तमान मुख्य मंत्री श्री प्रफुल्लसेन महोदय ने आचार्य श्री देशभूषण जी के प्रति प्रणाम कर अपना पूज्य भाव प्रदर्शित किया था। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन साधुओं के प्रति विज्ञवर्ग तथा अधिकारी वर्ग के हृदय में उज्ज्वल भाव विद्यमान है।

सर्वदा पैदल ही विहार कर देश के ग्रामों एवं नगरों में सत्य और अहिंसा धर्म का प्रतिपादन करने वाले इन विश्ववन्द्य साधुओं के उपदेश से हजारों लोगों ने मद्य त्याग, जीववध त्याग आदि द्वारा अपना कल्याण किया है। जो व्यक्ति इनके वास्तविक स्वरूप के अपरिचयवश यह धारणा बनाये हुए हैं कि दिगम्बर जैन मुनियों को सदा वनों में निवास करना चाहिए तथा उन्हें कलकत्ता, दिल्ली जैसे समृद्ध और समुन्नत नागरिकों के मध्य निकलनेवाले जूलूसों में सम्मिलित नहीं होना चाहिए, इस अणुयुग में इन अरण्यवासियों को अपनी गतिविधि में अपने को समृद्ध, सुसंस्कृत और सभ्य समझनेवाले हमलोगों का शिष्यत्व स्वीकार कर सवस्त्र रहना चाहिए, अथवा नगर में नहीं आना चाहिए। ये लोग यह नहीं सोचते कि इन सन्तों के समागम से मानव जाति का कितना हित होता है? इनके द्वारा अहिंसात्मक आर्थिक विषमता का त्याग करते हुए साम्य जीवन को अहिंसा के माध्यम से मधुर किन्तु प्रबल प्रेरणा प्राप्त होती है। इनके जीवन को देखकर बड़े-बड़े धनकुबेरों के मन में अपनी भूल दिखने लगती है कि उन्होंने चार दिन के जीवन में अनेक दीन-हीन व्यक्तियों का अमर्यादित शोषण कर जो करोड़ों का
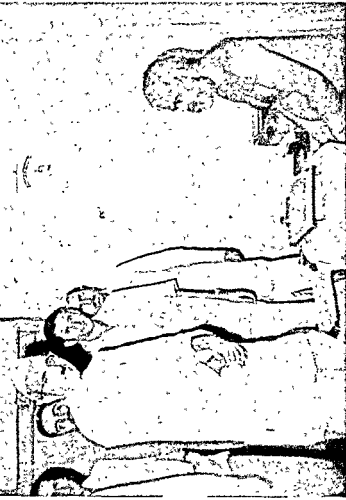
धर्मनेता आचार्य देशभूषण जी महाराज को दि० जैन लाल मन्दिर में दिल्ली की जैन समाज ने सन् १९५७ में 'आचार्यरत्न' के पद से अलंकृत किया था। उस अवसर पर कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ढेबरभाई भाषण दे रहे हैं।

श्री १०८ परम पूज्य, आचार्य रत्न, देशभूषण जी महाराज

का

संक्षिप्त जीवन चरित्र तथा परिचय

कर्नाटक प्रान्त के बेलगाँव जिले में कोथली पुर नाम का प्रसिद्ध ग्राम है, जिसमें सत्यगौड़ नाम के श्रावक रहते थे। वे इस गाँव के मुखिया थे, उनकी धर्मपत्नी का नाम अक्कावती था। वह दोनों ही धर्म परायण थे। इन देवी जी की कुक्षि से पूज्य श्री देशभूषण जी का जन्म सम्वत् १९६५ में हुआ था, इनका जन्म का नाम बालगौड़ था। माता जी इस संसार को असार जान कर इनको तीन मास का ही छोड़ कर चल बसी और पिता जी ने भी इनसे अधिक मोह न रक्खा और ६ वर्ष पश्चात् वे परलोक सिधार गये। अब इनका जीवन दुःख-मय बन गया। इनकी नानी जी ने इनका पालन पोषण किया। १६ वर्ष की अवस्था मे ही आपने कन्नाड़ी और महाराष्ट्री भाषाओं का विद्याध्ययन कर लिया। इनके चाचा जी इनकी पैतृक सम्पत्ति (भूमादि) की देख भाल करते थे। वे तथा इनके मामा जी इनके विवाह सम्बन्ध की आयोजना कर रहे थे कि इतने मे संयोगवश श्री १०८ जैकीर्ति जी मुनि महाराज का शुभागमन हुआ। उस समय ये १९ वर्ष के थे और इनका भाव मिथ्यात्व की ओर झुका हुआ था। इन्हें धर्म का ज्ञान नहीं था, मुनि महाराज का निमित्त और उपदेश लाभ मिलते ही इनमें धर्म भावना जागृत हो गई और गुरु के चरणो मे ही इन्होंने अपना मन लगा दिया। गुरु ने आज्ञा दी कि तुम हमारे पास न रह कर घर पर ही शास्त्र पढ़ा करो। उनसे इन्होंने जैन धर्म के प्रथम श्रेणीके ग्रन्थ जैसे सिद्धान्त प्रवेशिका, द्रव्य-संग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार के अध्ययन का नियम लिया। इन ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् ये गुरु के पास गये तब उन्होंने इनको उपदेश दिया कि अब खाने पीने में भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान रख कर अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करो। सबसे प्रथम उन्होने बैंगन, प्याज, बीड़ी, पान आदि का त्याग कराया और दो तीन महीने तक पास में न रहने का आदेश दिया और अन्य श्रावकों से कहा कि देखो यह नियम पालन कर रहे हैं या नहीं। पूरी जाँच के बाद गुरु ने

इनसे अष्ट मूल गुण धारण कराये, तब लोगों ने यह देख कर कि यहीं घर बार छोड़ कर न चले जावें जल्दी विवाह करने की सोची। उसी समय गुरु श्री १०८ जैकीर्ति जी श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा करने जा रहे थे तब इन्होंने कहा कि हमें शिखर जी की यात्रा कर आने दो तब तक विवाह सम्बन्ध की कोई चर्चा न करो। गुरु जी का समागम करके अपने निजी खर्चे से शिखर जी की यात्रा को चल दिये और वहाँ पहुँच कर सभी टोंकों की आनन्द पूर्वक बन्दना कर जब श्री पार्श्वनाथ भगवान की टोंक पर पहुंचे तब गुरु जी से इन्होंने प्रार्थना की कि महाराज अब तो इस असार संसार से मुक्त होने के लिए मुझे दीक्षा दीजिये। गुरु जी ने तब इन्हे छटी प्रतिमा के व्रत वहीं टोंक पर दिये क्योंकि उन्हें निश्चय हो गया था कि अब यह व्रत नहीं छोड़ेंगे। यात्रा करने के पश्चात् ये फिर घर नहीं गये और ६ मास गुरु जी के साथ रहे। जब रायपुर दुर्ग छत्तीसगढ़ पहुँचे वहाँ गुरु जी ने कहा कि अब तुम मुनिव्रत ले सकते हो। तब चतुर्मास के बाद सी पी मे जो रामटेक तीर्थ है वहाँ लगभग १० हजार श्रावकों के समक्ष ये मुनि दीक्षा लेने को तैयार हो गये। इतनी अल्प आयु में इनके मुनि दीक्षा लेने पर जनता बड़ा ही आश्चर्य करने लगी और कहने लगी कि पहले क्षुल्लक या ऐलक होना चाहिए। तब गुरु ने कहा कि आप लोग आश्चर्य न करें हमें पूर्ण विश्वास है कि ये मुनि व्रत दृढ़ता से पालेंगे। लोगों ने फिर भी विरोध किया तब गुरु जी ने कहा कि अच्छा भाई पहले एक महीने का ऐलक व्रत ले लो। गुरु आज्ञा से १ महीने ऐलक रह कर कुंथल गिरी जहाँ से श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि मोक्ष गये हैं, विहार करते हुए उसी क्षेत्र में जा पहुँचे वहाँ इन्होंने फिर गुरु जी से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव इस क्षेत्र पर अब हमें अवश्य ही मुनि दीक्षा दे दीजिये, तब गुरु जी ने यहीं मुनि दीक्षा दे दी। अब क्या था गुरु के समागम में दो तीन वर्ष रहने से विद्याध्ययन का पूर्ण लाभ मिल गया। इन्हें संस्कृत में प्रथम भाग धनंजय नाम माला आदि ग्रन्थों को भली भाँति समझाया। अनेक देश देशान्तरों में विहार करते हुए श्री गोम्टेश्वर में चतुर्मास हो गया। इस चतुर्मास में कनाड़ी काव्य का पूर्ण अभ्यास किया। वहाँ से नागपुर पहुँचे। उस समय ये केवल मराठी में उपदेश देते थे। हिन्दी-नागरी का ज्ञान बहुत कम था। फिर सिवनी पहुँचे। वहाँ की जनता ने आग्रह करके तीन मास तक रोक रक्खा, श्री पं० सुमेरचन्द दिवाकर ने महाराज को हिन्दी पढ़ाना आरम्भ कर दिया और कुछ ही काल में ये अच्छी हिन्दी बोलने लगे। जब नागपुर में चौमासा हुआ वहाँ पं० शान्तिनाथ शास्त्री ने महाराज को सर्वार्थ सिद्धि व जीवकांड पढ़ाया। फिर वहाँ से विहार करके शिखर जी यात्रा करते हुए

बनारस पहुँचे। वहां के भक्तगणों ने आग्रह करके चातुर्मास कराया और महाराज ने मद्रास प्रान्तों में विहार करते हुए निजाम स्टेट (हैदराबाद राज्य) के रायचूर जिले में प्रवेश किया। इस बस्ती में केवल ८ घर जैनियों के थे और मुसलमान अधिक होने से इस नगर में दिगम्बर जैन मुनि का प्रवेश करना अत्यन्त कठिन था। वहां के श्रावकों ने नगर से बाहर सेठ हरधर-घरतपा के बंगले पर ठहरने की व्यवस्था कर दी थी। महाराज ने पूछा कि मन्दिर कहां हैं? हम दर्शन अवश्य करेंगे तब लोगों ने कहा कि महाराज मन्दिर मुसलमानों के किले के अन्दर हैं। वहां जाना असम्भव है। तब महाराज ने आग्रह किया कि हम दर्शन करने के लिये अवश्य जायेंगे। तब केवल दो एक श्रावक ही साथ चले, महाराज ने बाजार में होते हुए किले में प्रवेश किया और श्री जी के दर्शन कर दूसरे मोहल्ले के बाजार में होते हुए बंगले पर आ गये। उस समय ९ बज चुके थे और महाराज आहार शुरू ही कर रहे थे कि ३०० मुसलमानों की सशस्त्र भीड़ (लाठी तलवार भाला लिए हुए) ने आकर बंगले को घेर लिया। तब महाराज ने उपसर्ग आया जानकर आहार का त्याग कर दिया और साहस पूर्वक भीड़ को समझाया वे लोग वहां से लौट गये पर कलक्टर के यहां जाकर अर्जी दे दी कि राज्य में नग्न साधु न रहने पावें। सेठ भी कलक्टर के पास पहुँचे। कलक्टर ने सेठ का स्वागत किया और आने का कारण पूछा। तब उन्होंने कहा कि सौभाग्य से नगर में हमारे गुरु का शुभागमन हो गया है। वे नग्न रहते हैं। अतः आप भी उनके दर्शनार्थ पधारें। तब कलक्टर ने पूछा कि यही साधु हैं? मुसलमानों ने कहा कि हां, यही साधु हैं। कलक्टर ने सब सच्चा हाल जान कर अर्जी फाड़ कर फेंक दी और स्वयं अपनी कार में बैठ कर उसी समय बंगले पर दर्शनों को आये। उनके हृदय पर जैन मुनि का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कलक्टर ने सारी पुलिस बुलाली और बड़े जलूस के साथ इनको मन्दिर जी के दर्शन करा कर बंगले पर वापस लाये। फिर महाराज का प्रवचन सुनकर कलक्टर अति ही आनन्दित हुआ और वहां ही केश लोंच करने की आज्ञा दे दी। केशलोंच दो बजे शुरू होकर चार बजे समाप्त हुआ। कलक्टर की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। और सभी महाराज की जय बोलने लगे।

श्री महाराज यहां से गुलबर्गा पधारे और यहां चार पांच दिन तक ठहर कर गुलबर्गा से आलन्दा की तरफ विहार किया मार्ग में संध्या हो गई। यहां एक नाले के पुल के नीचे ठहर गये। साथ में केवल दो या तीन आदमी थे। अचानक बादल उठा और जोर से वर्षा हुई। नाला बढ़ गया। महाराज सामायिक में थे उनकी छाती तक पानी चढ़ गया। रात्रि होने से वे कहीं को विहार

नहीं कर सकते. वे केवल एक पत्थर का सहारा लिए हुए वहीं ही बैठ गये। जब पास के गांव में खबर पहुँची तब सब लोग दौड़े आये और महाराज को कन्धे पर बिठाकर पानी से बाहर निकाला। महाराज नालन्दा की ओर से विहार करना चाहते थे। नग्न साधु का प्रवेश राज्य की ओर से निषेध था। आपने श्रावकों को वहीं छोड़ दिया। स्वयं अकेले कमण्डल उठाकर, मार्ग पूछ कर, चल दिये। मार्ग में सशस्त्र पुलिस आ गयी और रास्ता रोका—आचार्य श्री, उपसर्ग जानकर, वहीं बैठ गये। राज्य को तार आदि दिये गये। संध्या को ६ बजे—राज्य से तार द्वारा आज्ञा प्राप्त हुई कि 'महाराज को बढ़ने से न रोको'। आप चार पांच दिन वहीं समीप के स्थानों पर रहे। उसके बाद आचार्य श्री पटना की ओर बढ़े। वहां भी पहले आपके विहार पर इसी प्रकार विरोध हुआ परन्तु तत्काल ही राजाज्ञा मिली कि महाराज सहर्ष विहार कर सकते हैं।

आलन्दा से विहार करते हुए महाराज श्री नागपुर पधारे और महाराज का चौमासा नागपुर में हुआ। चौमासे के बाद महाराज श्री गोमट स्वामी जी की यात्रा के लिए संघ सहित निजाम स्टेट में पधारे। खबर पाते ही निजाम ने स्वयं अपने दरबारियों सहित आकर महाराज जी का स्वागत किया और ७ मील की दूरी से बड़े जलूस के साथ हैदराबाद ले गये। मंदिर के दर्शन कराकर अपने बेगम-बाग में ठहराया और ८ दिन के लिए मदिरा व मांस का बाजार बन्द करा दिया, आठ दिन तक सरकारी पुलिस भी इन्सपैक्टर सहित महाराज जी की सेवा में लगी रही। प्रतिदिन जो उपदेश होता था वे लिख कर ले जाते थे और अन्त में जो उपसर्ग हुये थे, उनकी क्षमा मांगी।

निजाम साहब ने फिर यह फरमान निकाला कि हमारे राज्य में यह महाराज जहाँ भी जायें वहां सभी इनकी सेवा करें और कहीं पर भी इनके विहार में आपत्ति न आवे। यह सब महाराज के तपश्चरण का प्रभाव है कि इतना बड़ा राजा मुसलमान होने पर भी झुक गया और उसने जैन धर्म का सत्कार किया।

तदनन्तर महाराज श्री अनेक देशों में बेलगोल, बंगलोर, मद्रास, हैदराबाद, गुलबर्गा, आलन्दा, अमरावती, नागपुर, विहार, श्रीप्रभुन्दयजी, गिरनारजी श्री सम्मेद शिखर जी, बनारस, लखनऊ अयोध्या, सुमेर गंज बाराबंकी, टिकैत नगर, कानपुर, इटावा, आगरा, श्री महावीर जी, आदि में पैदल विहार करते हुए राजस्थान की राजधानी जयपुर में पहुँचे जहां आपने १९५४ में चतुर्मास

किया दिल्ली की जनता के अत्यधिक आग्रह पर ता० २६-५-५५ को दि० जैन मन्दिर कूचा सेठ दिल्ली पधारे राजधानी दिल्ली आज विश्व का एक महान नगर है और भारत के समस्त धर्मों के महान कार्य इसी नगरी में समपन्न होते हैं। आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज का प्रति दिन प्रातः तथा दोपहर को भाव पूर्ण ओजस्वी तथा विद्वतापूर्ण प्रवचन होता था जिसमें सहस्त्रों की सख्या में जनता उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाती थी। आचार्य श्री के प्रवचन जैन समाज के लिये ही सीमित नही थे। वरंच प्रत्येक प्राणी जिसकी धर्म में श्रद्धा थी वह एकाग्र चित्त होकर आचार्य श्री के प्रवचनों को सुनता था और उससे प्रभावित होकर सहस्रों अजैनों ने मद्य-मांस मदिरा का त्याग किया। भारत के अनेक प्रमुख व्यक्ति उदाहारणतया कांग्रेस के प्रधान श्री ढेबर भाई, स्वर्गीय पं गोविन्दवल्लभ पंत, भारत के ग्रह मंत्री, मैसूर के मुख्य मंत्री श्री निजलिङ्गप्पा, सुप्रीम कोर्ट के जज श्री वेंकटारमण आय्यर, आचार्य श्री के प्रवचन से धर्म लाभ उठाने के लिये आचार्य श्री के चरणों में उपस्थित होते थे। भारत के सर्व प्रमुख उद्योगपति धर्म निष्ट श्री जुगल किशोर जी बिड़ला तो महाराज श्री की प्रवचन शैली से इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने दिल्ली के प्रमुख बिड़ला मंदिर नई दिल्ली में आचार्य श्री के सार्वजनिक भाषण कराये तथा उनके प्रवचनों को पुस्तकाकार में जनता के हितार्थ प्रकाशित किये। १९५५ के चर्तुमास के पश्चात आचार्य श्री दिल्ली से विहार करना चाहते थे किन्तु जनता के लगातार आग्रह से आपने १९५६ में एक और चतुर्मास इस महान नगरी में पहाड़ीधीरज पर करने की स्वीकृति दी। १९५६ का वर्ष भारत के इतिहास में एक विशेष महत्व का वर्ष था भारत सरकार की ओर से बहुत विस्तृत रूप में भगवान् बुद्ध की २५००वीं जयन्ती मनाने का निश्चय किया गया था। आचार्य श्री की प्रबल आकांक्षा थी कि इस अवसर पर जैन धर्म की ओर से बौद्ध सम्मेलन में संसार के मस्त देशों के आये हुये प्रतिनिधियों की जानकारी के लिये एक जैन सम्मेलन तथा जैन धर्म सम्बन्धी कला तथा साहित्य की प्रदर्शिनी नई दिल्ली के ही किसी प्रमुख स्थान पर अवश्य की जावे। उसी के फलस्वरूप भारत की समस्त जैन समाज की ओर से नवम्बर १९५६ में एक विराट प्रदर्शनी तथा सम्मेलन का आयोजन ३ दिन के लिये सप्रू हाउस नई दिल्ली किया गया। जिसकी अध्यक्षता दानवीर समाज सेवी साहू शान्ति प्रसाद जी ने की। यह एक महान और नवीन प्रयास था जिसकी सफलता केवल आचार्य श्री की प्रेरणा तथा आशीर्वाद पर निर्धारित थी। उस अवसर पर संसार के विभिन्न धर्मों के विशिष्ट प्रतिनिधियों

को जैन धर्म की जानकारी के लिये आचार्य श्री की प्रेरणा से श्री तत्वार्थ सूत्र, श्री आत्मानुशासन, श्री द्रव्य संग्रह, तथा श्री पुरुषार्थसिद्धयुपाय आदि ग्रन्थों को पुनः अंग्रेजी में प्रकाशित कराया गया।

२४ दिसम्बर सन् १९५७ को आचार्य श्री ने दिल्ली से श्रीसम्मेद शिखर जी तथा कलकत्ते की ओर विहार किया। मार्ग में खुर्जा, अलीगढ़, टूंडला, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, कानपुर, आगरा, बनारस आदि स्थानों पर धर्म उपदेश देते हुये श्री सम्मेद शिखर जी की वन्दना की। कलकत्ते की जैन समाज के भावपूर्ण अनुरोध तथा अत्यधिक आग्रह पर वहां से विहार करते हुये भारत की सबसे बड़ी नगरी कलकत्ते में चतुर्मास के लिये पहुंचे। वहा पर आचार्य श्री का भव्य स्वागत कलकत्ते के मेयर, डिप्टमेयर, पश्चिमी बंगाल की विधान सभा के स्पीकर तथा डिप्टी स्पीकर, राज्य सभा के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष, राज्य के मन्त्रियों, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मन्त्री, राज्य तथा विधानसभा के सदस्यों, नगर निगम के काउन्सिलरो, अमृत बाजार पत्रिका, दैनिक विश्वामित्र तथा सन्मार्ग आदि प्रमुख पत्रों के सचालकों तथा अन्य जनता द्वारा किया गया। कलकत्ते में प्रति दिन आचार्य श्री का भाषण सार्वजनिक स्थान पर होता था जिसमें सहस्रों बंगाली उपस्थित होते थे। कलकत्ते के धार्मिक रथोत्सव के समय वहां की आदरणीय राज्यपाल श्रीमती पदमजा नायडू ने महाराज तथा उनके साथी दक्षिण भारत से समागत चतुष्टय पर पुष्प वर्षा करके मातृ जाति का प्रतिनिधित्व करते हुए दिगम्बर सन्तों के प्रति अपनी सदभावना भक्ति तथा समादर का भाव व्यक्त किया था।

दि० जैन सम्मेलन कलकत्ता के रजत जयन्ती समारोह के उद्‌घाटन अवसर पर पश्चिमी बंगाल के वर्तमान मुख्य मंत्री श्री प्रफुल्लचंद्र सेन ने आचार्य संघ के दर्शन बड़ी भक्ति पूर्वक किये।

१९५८ में आचार्य श्री ने दक्षिण की ओर विहार किया, १९५९ में शाहपुरी कोल्हापुर, १९६०-१९६१ में मानगांव कोल्हापुर, तथा १९६२ में अब्दुल्लाट जिला कोल्हापुर में चतुर्मास किये। १९६१ में बेलगांव में हमारे वर्तमान राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी साधु सम्मेलन में आचार्य श्री के प्रवचन सुनने के लिये पधारे आचार्य श्री ने राष्ट्रपति के प्रति कानडी में आशीर्वाद दिया। डा० राधाकृष्णन जी ने एक बहुत ही सुन्दर श्लाघनीय तथा विद्वत्तापूर्ण भाषण स्याद्वाद की महत्वता पर दिया। फरवरी १९६३ में कुम्भोज बाहुबली की प्रतिष्ठा के अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री कन्नमवार ने स्वयं उपस्थित हो कर महाराज के चरणों में श्रद्धांजली भेंट की।

आज के आधुनिक युग में जबकि संसार प्रगति की ओर बढ़ रहा है प्रत्येक धर्म को अपने अस्तित्व के लिये धर्म प्रभावना की अत्यन्त आवश्यकता है। आचार्य श्री धर्मप्रभावना के लिये सतत प्रयत्नशील हैं आपकी ही प्रेरणा से श्री अजुध्या जी में भगवान वृषभ देव की ३१ फुट ऊंची विशाल मूर्ति की प्रतिष्ठा शीघ्र ही होने जा रही है, अयोध्या का जैन इतिहास तथा उससे अधिक भारत के इतिहास में बड़ा महत्व है। इसके अतिरिक्त अतिशय क्षेत्र अक्विाट विद्यासागर, मागूर, मनोली, दतवाड़, कोल्हापुर, २ कम्भोज, बाहुबली तथा जैसिंहपुर आदि की प्रभावशाली प्रतिष्ठायें आपकी प्रेरणा तथा सदप्रयत्नों के फल हैं। आपकी विशेष रुचि शिक्षा प्रचार की ओर है उसही दृष्टि कोण से कोल्हापुर में आपकी ही प्रेरणा से देश भूषण शिक्षा केन्द्र की स्थापना हुई है जिसमें एक बाई ने ही अपनी दो लाख से अधिक की जायदाद दान स्वरूप प्रदान की है और इसके अन्तर्गत एक हाई स्कूल की नींव डाल दी गई है तथा कालिज की योजना की जा रही है। लश्कर में छात्रालय के लिये आचार्य श्री के संकेत मात्र पर ही २३ कमरों की स्वीकृति विभिन्न दानियों ने तत्काल ही प्रदान कर दी। आचार्य श्री संस्कृत, कानडी, मराठी तथा हिन्दी के अद्भुट विद्वान् हैं और अपने समय का बहु मूल्य भाग अधिकतर शास्त्र रचना आदि में लगाते हैं। आपने अबतक लगभग ५० से अधिक शास्त्रों की रचना तथाउन के अनुवाद आदि किये है। गत ६ या ७ वर्षों में आपने समयसार, प्रवचनसार, दश भक्ति आदि संग्रह, धर्मामृत सार, निरजन स्तुति, जैन गीता काव्य, दश लाक्षण धर्म आदि शास्त्रों का मराठी, कन्नड तथा हिन्दी में रचना तथा अनुवाद किये हैं। आपके प्रवचन बड़े सरल तथा जनता के हृदय ग्राही शब्दो मे होते हैं। जैपुर मे दिये गये प्रवचन, देहली में किये गये प्रवचन, तथा कलकत्ते के प्रवचन ६ पुस्तकों के रूप में जनता के हितार्थ प्रकाशित किये जा चुके है जिससे सहस्रों नर नारियो तथा बालकों ने धर्म लाभ उठाया है।

आचार्य श्री बड़ो ही सरल प्रकृति के साधु, हैं। आपकी तपस्चर्या अति महान् है उपसर्ग आदि बड़े शान्ति चित्त से आप सहन करते हैं। अभी दिल्ली की ओर विहार करते समय शाहजहांपुर के समीप आप शौच के लिये जब जारहे थे—रास्ते में काफी ठंडक थी एक काला सर्प आपके बायें पैर में लिपट गया आचार्य श्री ने पैर छिटका तो सर्प छोड़कर चला गया परन्तु अपनी प्रकृति अनुसार बायें पांव में काट गया। आचार्य श्री ने कोई औषधि आदि (कांट छांट) नहीं कराई। सर्प के दांत पैर में गड़ गये थे उसमें से १॥

दांत श्रावकों ने उसी दिन महाराज श्री के चरण में से निकाले। आधा दांत अन्दर रह गया था जो १४ दिन बाद ग्वालियर के समीप निकाला गया।

शिवपुरी से धौलपुर तक का मार्ग कुख्यात डाकुओं का निवास स्थान है आचार्य श्री के दर्शनों के बहाने कितने ही प्रसिद्ध डाकू आचार्य श्री के संघ में आये। संघ के श्रावक तथा श्राविकाओं को बहुत खतरा था। परन्तु आचार्य श्री ने उनको आश्वासन दिया और विश्वास दिलाया कि संघ को डाकुओं से कोई खतरा नहीं है वे समस्त डाकू आचार्य श्री के व्यक्तित्व, गुण तथा व्यवहार से इतने प्रभावित हुये कि वे संघ को बिना किसी प्रकार का कष्ट दिये हुये आचार्य श्री के चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित कर और उन्हें मार बीड़ी सुनाकर वापिस चले गये। आचार्य श्री एक तेजस्वी साधु हैं और कितने ही आश्चर्यजनक कार्य विपत्ति के समय आपके द्वारा सम्पूर्ण हुये हैं श्री मान गांव की प्रतिष्ठा के समय जीर्णोद्धार के लिये श्री चन्द्रप्रभु भगवान् की प्रतिमा समस्त जनता के अनेक तथा अथक प्रयत्नों के बाद भी उतार कर नहीं रखी रही थी उस समय जनता ने आचार्य श्री से प्रार्थना की और आपने जिनेन्द्र देव को स्मरण करके जैसे ही प्रतिमा जी को भाव भक्ति पूर्वक स्पर्श किया सो प्रतिमा जी बड़ी सुगमता से आचार्य श्री के हाथों से उठ गई, जनता में आनन्द की लहर जागृत हुई और आचार्य श्री की जयनाद गूंज उठी।

आचार्य श्री के उपदेशों से प्रभावित होकर सहस्रों अजैनों ने जैन धर्म के प्रति अपनी रुचि प्रदर्शित की और मद्य-मांस मधु का त्याग कर जैन श्रावक के व्रत लिये। इसके अतिरिक्त लगभग ४० भव्य आत्माओं ने आचार्य श्री से मुनि, अर्जिका, एलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, सातवीं तथा उच्च श्रेणी के व्रत ग्रहण किए हैं। आचार्य श्री का अपने संघ पर भी सुन्दर नियन्त्रण है और समस्त संघ आप जैसे आचार्य के प्रति बड़ा अनुगृहीत है।

आचार्य श्री एक महान् आत्मा है और हम श्रावक इसी बात की प्रार्थना कर सकते हैं कि आचार्य श्री दीर्घायु हो कर हम संसारी जीवों को धर्म-लाभ देते रहें और हमारे मध्य में एक आदर्श धर्म नेता के रूप में विद्यमान रहकर धर्म की प्रभावना तथा समाज की उन्नति करते रहें। हमारा बड़ा सौभाग्य होगा यदि आप आपके चरणों के प्रसाद से हम कुछ भी आत्मोन्नति की ओर अग्रसर हो सकें।

President of India,
Dr. Sarvapalli Radhakrishnan.
Secretary to the President of
India, Rashtrapati Bhavan,
New Delhi-4.

No. F. 46(3)-G/62.

भारत के राष्ट्रपति का सचिव,
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-४
June 4, 1962
Jyaistha 14, 1884 Saka

Dear friend,

The President thanks you for conveying to him the message of blessings from His Holiness Acharya Ratna Bal Brahmachari Yogendra Chooramani Desh Bhooshanji Maharaj Digambar Jain Guru on his assumption of office and has asked me to request you to convey his respects to His Holiness.

Yours sincerely,
Sd/- R.K. RAMADHYANI

The General Secretary,
Panch Kalyanak Pratishtha Committee,
Ayodhiapuri,
Shukrawarpeth,
Kolhapur.

मुद्रक : नवचेतन प्रेस (प्रा.) लि. (लीजिंग ऑफ अर्जुन प्रेस),
नया बाजार, दिल्ली ।

आचार्य महाराज के साथ जैन मित्र मण्डल दिल्ली के सदस्यों के बीच में एयर कोमोडोर श्री एस. एन. गोयल खड़े हैं।